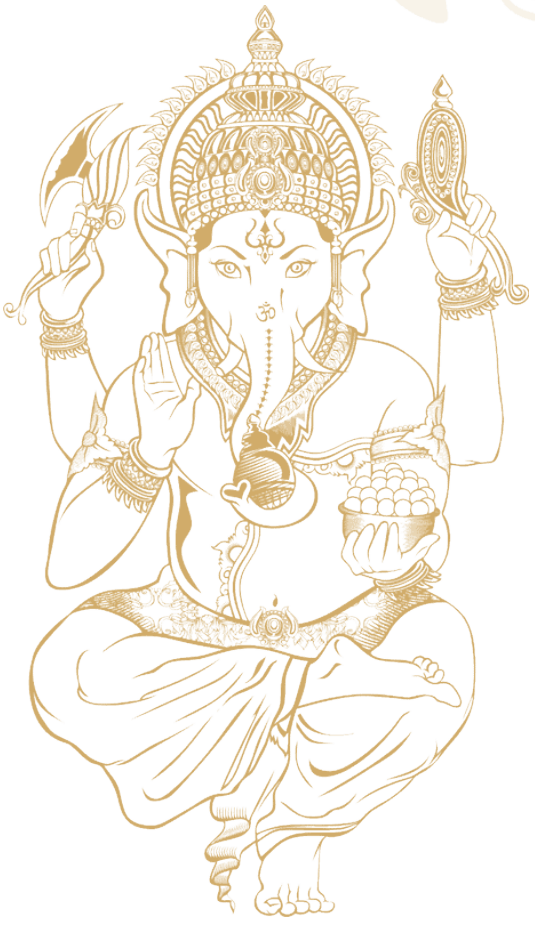

Ojaswini Sharma

29 May 2023

04:59 PM

Chhindwara

Model: Web-MyKundli

Order No: 119883801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**29/05/2023**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**16:59:00 घंटे**
इष्ट	28:40:12 घटी
स्थान	**Chhindwara**
राज्य	Madhya Pradesh
देश	India

अक्षांश	22:04:00 उत्तर
रेखांश	78:58:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:14:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	16:44:52 घंटे
वेलान्तर	00:02:38 घंटे
साम्पातिक काल	09:11:49 घंटे
सूर्योदय	05:30:55 घंटे
सूर्यास्त	18:52:16 घंटे
दिनमान	13:21:21 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	13:47:01 वृष
लग्न के अंश	19:40:19 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	तुला - शुक्र
राशि-स्वामी	**कन्या - बुध**
नक्षत्र-चरण	**उ०फाल्गुनी - 3**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	वज्र
करण	तैतिल
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	पा-पल्लवी
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1945	ज्येष्ठ	8
पंजाबी	संवत : 2080	ज्येष्ठ	15
बंगाली	सन् : 1430	ज्येष्ठ	14
तमिल	संवत : 2080	वैकासी	15
केरल	कोल्लम : 1198	इदवम	15
नेपाली	संवत : 2080	ज्येष्ठ	15
चैत्रादि	संवत : 2080	ज्येष्ठ	शुक्ल 9
कार्तिकादि	संवत : 2080	ज्येष्ठ	शुक्ल 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 9
तिथि समाप्ति काल _____: 11:49:24
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: उ०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 28:16:40 घंटे
जन्म योग _____: उ०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____: वज्र
योग समाप्ति काल _____: 20:37:49 घंटे
जन्म योग _____: वज्र
सूर्योदय कालीन करण _____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 11:49:24 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 37:08:16
भभोग _____: 65:22:25
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 2 वर्ष 7 मा 8 दि

घात चक्र

मास _____: भाद्रपद
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: श्रवण
योग _____: शुक्ल
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: मेष
चन्द्र _____: वृश्चिक
मंगल _____: वृष
बुध _____: मीन
गुरु _____: मिथुन
शुक्र _____: कर्क
शनि _____: मीन
राहु _____: सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

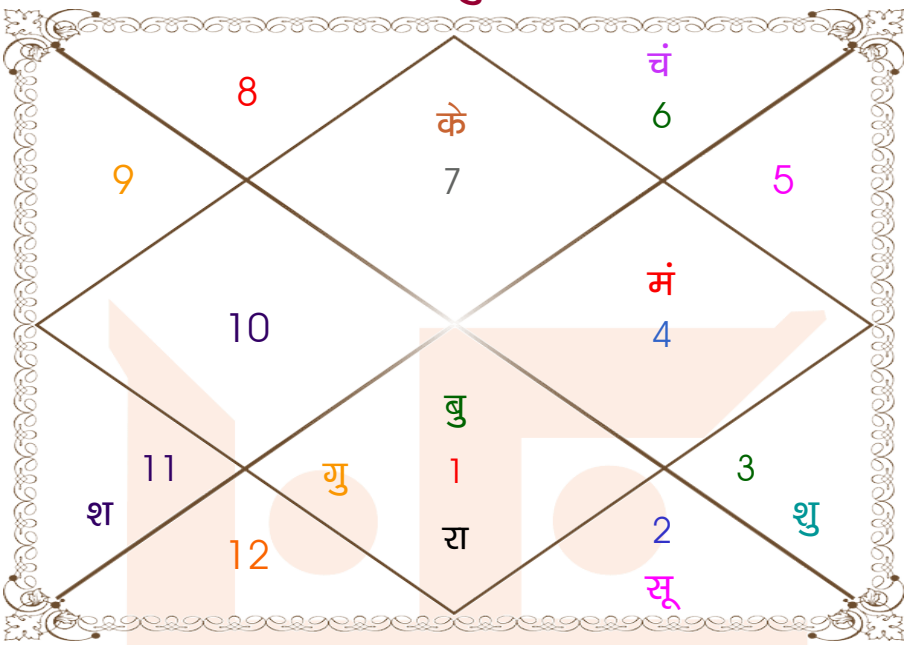

चन्द्र कुंडली

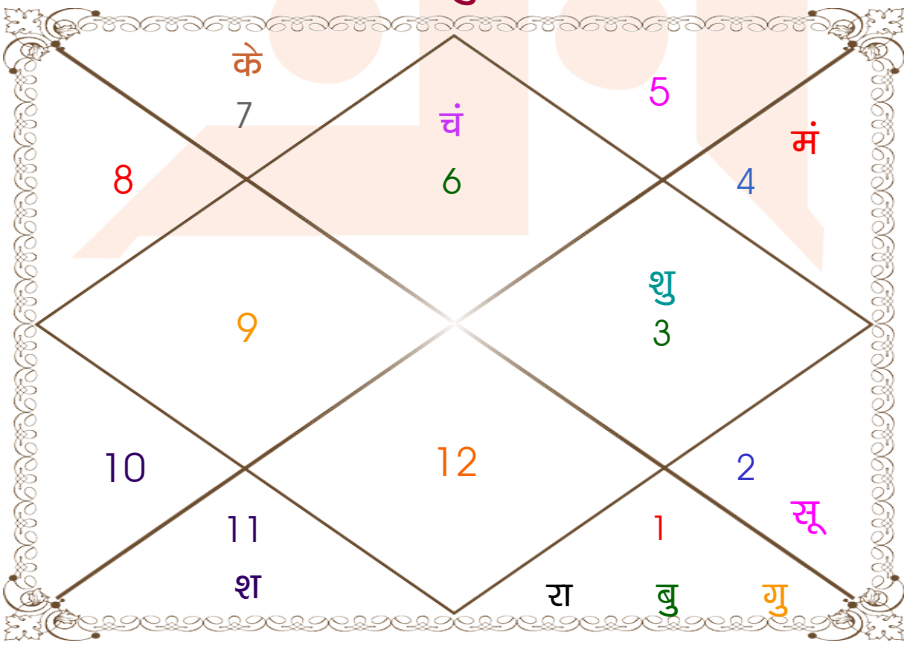

Astrologer Sourabh Tripathi
Astrology | Vastu | Gems Stone
+917024551008
P.sjk1008@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

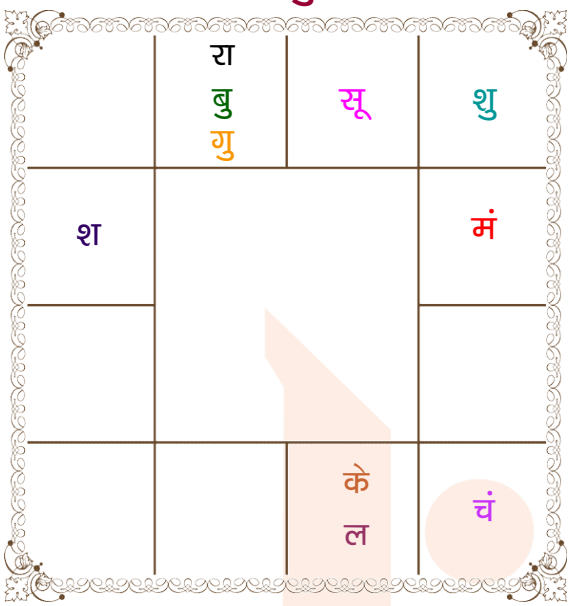

लग्न कुंडली

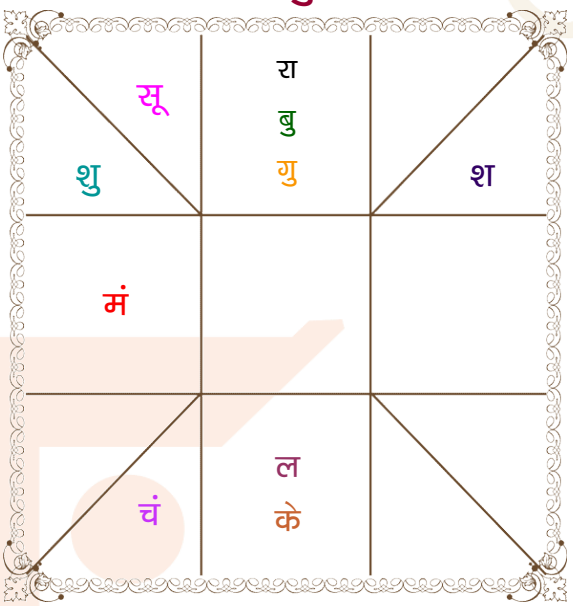

विंशोत्तरी
सूर्य 2वर्ष 7मा 8दि

सूर्य

29/05/2023

07/01/2140

सूर्य	06/01/2026
चन्द्र	06/01/2036
मंगल	06/01/2043
राहु	05/01/2061
गुरु	05/01/2077
शनि	06/01/2096
बुध	06/01/2113
केतु	07/01/2120
शुक्र	07/01/2140

योगिनी
सिद्धा 3वर्ष 0मा 15दि

सिद्धा

29/05/2023

13/06/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	29/05/2023
धान्या	14/07/2023
भ्रामरी	23/04/2024
भद्रिका	13/04/2025
उल्का	13/06/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	19:40:19	320:56:38	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	---
सूर्य			वृष	13:47:01	00:57:34	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			कन्या	04:12:21	12:15:06	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	मित्र राशि
मंगल			कर्क	10:59:34	00:34:40	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	सूर्य	नीच राशि
बुध			मेष	19:07:49	00:58:05	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	सम राशि
गुरु			मेष	08:46:21	00:13:04	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	मित्र राशि
शुक्र			मिथु	28:59:48	01:00:00	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	सूर्य	मित्र राशि
शनि			कुंभ	12:49:43	00:01:53	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	बुध	मूलत्रिकोण
राहु			मेष	09:29:01	00:01:39	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	शनि	शत्रु राशि
केतु			तुला	09:29:01	00:01:39	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	सम राशि
हर्ष			मेष	25:58:59	00:03:21	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	केतु	---
नेप			मीन	03:19:36	00:01:02	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	---
प्लूटो	व		मक	06:06:40	00:00:44	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	---
दशम भाव			कर्क	21:24:47	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

के.पी. अयनांश : 24:04:41

लग्न-चलित

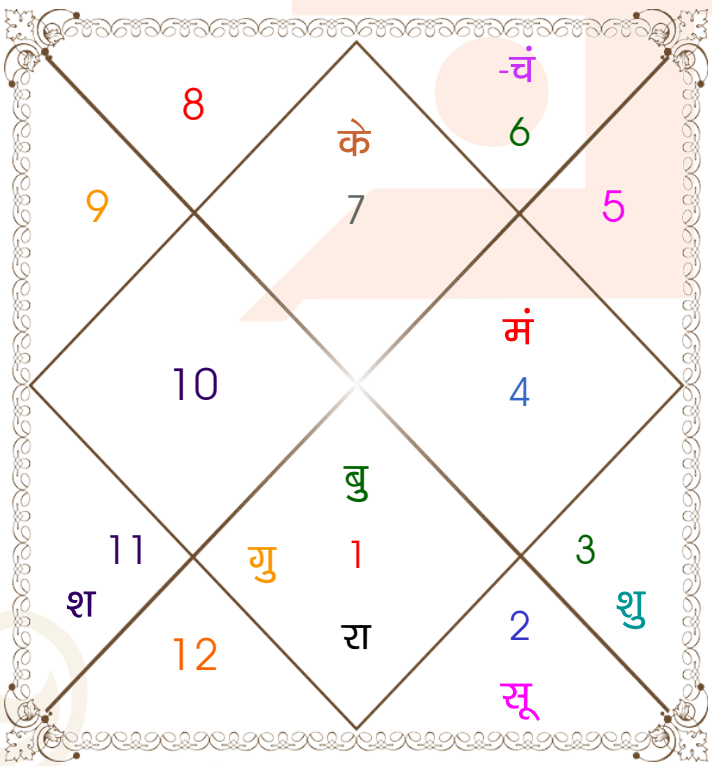

चन्द्र कुंडली

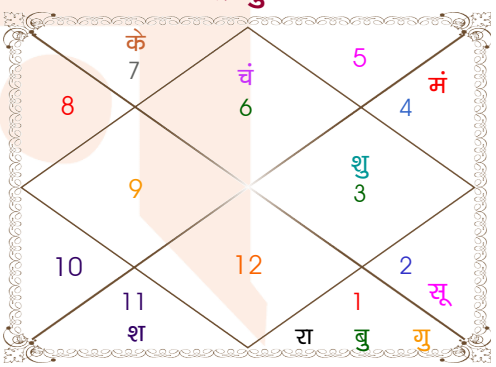

नवमांश कुंडली

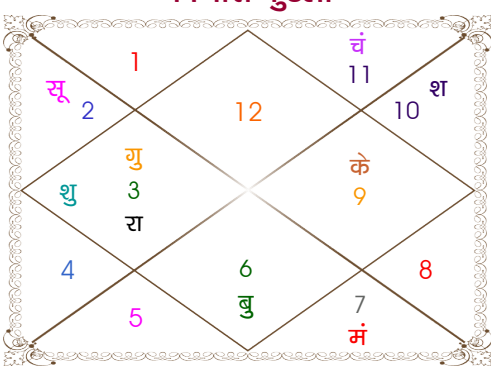

Astrologer Sourabh Tripathi
Astrology | Vastu | Gems Stone
+917024551008
P.sjk1008@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	04:57:44	तुला	19:40:19
2	वृश्चिक	04:57:44	वृश्चिक	20:15:09
3	धनु	05:32:33	धनु	20:49:58
4	मकर	06:07:23	मकर	21:24:47
5	कुम्भ	06:07:23	कुम्भ	20:49:58
6	मीन	05:32:33	मीन	20:15:09
7	मेष	04:57:44	मेष	19:40:19
8	वृष	04:57:44	वृष	20:15:09
9	मिथुन	05:32:33	मिथुन	20:49:58
10	कर्क	06:07:23	कर्क	21:24:47
11	सिंह	06:07:23	सिंह	20:49:58
12	कन्या	05:32:33	कन्या	20:15:09

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	19:40:19
2	वृश्चिक	18:54:27
3	धनु	19:26:48
4	मकर	21:24:47
5	कुम्भ	23:32:39
6	मीन	23:22:34
7	मेष	19:40:19
8	वृष	18:54:27
9	मिथुन	19:26:48
10	कर्क	21:24:47
11	सिंह	23:32:39
12	कन्या	23:22:34

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली

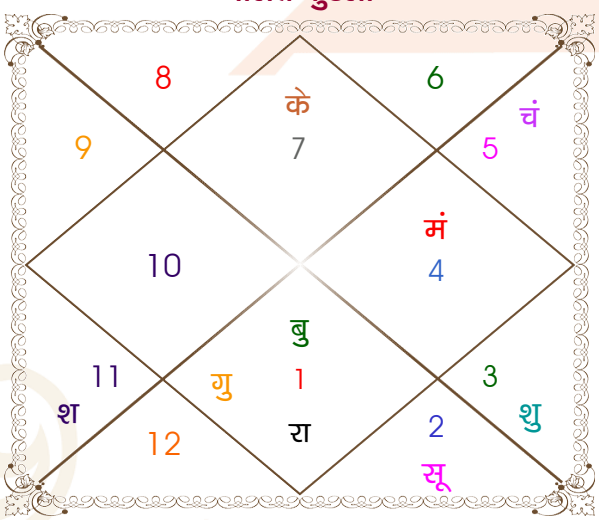

भाव कुंडली

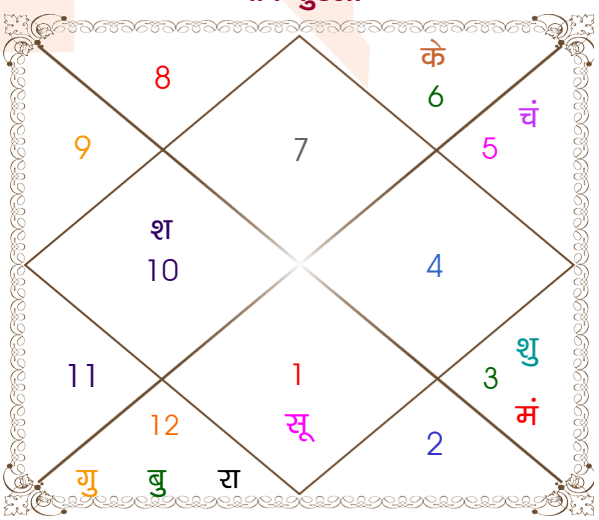

Astrologer Sourabh Tripathi
Astrology | Vastu | Gems Stone
+917024551008
P.sjk1008@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 7 मास 8 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
29/05/2023		06/01/2026		06/01/2036		06/01/2043		05/01/2061	
06/01/2026		06/01/2036		06/01/2043		05/01/2061		05/01/2077	
	00/00/0000	चंद्र	06/11/2026	मंगल	03/06/2036	राहु	18/09/2045	गुरु	23/02/2063
	00/00/0000	मंगल	07/06/2027	राहु	22/06/2037	गुरु	12/02/2048	शनि	06/09/2065
	00/00/0000	राहु	06/12/2028	गुरु	29/05/2038	शनि	19/12/2050	बुध	13/12/2067
	00/00/0000	गुरु	07/04/2030	शनि	07/07/2039	बुध	07/07/2053	केतु	18/11/2068
	29/05/2023	शनि	06/11/2031	बुध	04/07/2040	केतु	25/07/2054	शुक्र	20/07/2071
शनि	25/10/2023	बुध	07/04/2033	केतु	30/11/2040	शुक्र	25/07/2057	सूर्य	07/05/2072
बुध	30/08/2024	केतु	06/11/2033	शुक्र	30/01/2042	सूर्य	19/06/2058	चंद्र	06/09/2073
केतु	05/01/2025	शुक्र	07/07/2035	सूर्य	07/06/2042	चंद्र	19/12/2059	मंगल	13/08/2074
शुक्र	06/01/2026	सूर्य	06/01/2036	चंद्र	06/01/2043	मंगल	05/01/2061	राहु	05/01/2077

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
05/01/2077		06/01/2096		06/01/2113		07/01/2120		07/01/2140	
06/01/2096		06/01/2113		07/01/2120		07/01/2140		00/00/0000	
शनि	09/01/2080	बुध	04/06/2098	केतु	04/06/2113	शुक्र	09/05/2123	सूर्य	26/04/2140
बुध	18/09/2082	केतु	01/06/2099	शुक्र	05/08/2114	सूर्य	08/05/2124	चंद्र	25/10/2140
केतु	28/10/2083	शुक्र	02/04/2102	सूर्य	10/12/2114	चंद्र	07/01/2126	मंगल	02/03/2141
शुक्र	28/12/2086	सूर्य	06/02/2103	चंद्र	11/07/2115	मंगल	09/03/2127	राहु	25/01/2142
सूर्य	10/12/2087	चंद्र	08/07/2104	मंगल	08/12/2115	राहु	08/03/2130	गुरु	13/11/2142
चंद्र	10/07/2089	मंगल	05/07/2105	राहु	25/12/2116	गुरु	06/11/2132	शनि	30/05/2143
मंगल	19/08/2090	राहु	22/01/2108	गुरु	01/12/2117	शनि	07/01/2136		00/00/0000
राहु	25/06/2093	गुरु	29/04/2110	शनि	10/01/2119	बुध	07/11/2138		00/00/0000
गुरु	06/01/2096	शनि	06/01/2113	बुध	07/01/2120	केतु	07/01/2140		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 2 वर्ष 7 मा 3 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
05/01/2025		06/01/2026		06/11/2026		07/06/2027		06/12/2028	
06/01/2026		06/11/2026		07/06/2027		06/12/2028		07/04/2030	
शुक्र	07/03/2025	चंद्र	31/01/2026	मंगल	18/11/2026	राहु	28/08/2027	गुरु	09/02/2029
सूर्य	25/03/2025	मंगल	18/02/2026	राहु	20/12/2026	गुरु	09/11/2027	शनि	27/04/2029
चंद्र	25/04/2025	राहु	04/04/2026	गुरु	18/01/2027	शनि	04/02/2028	बुध	05/07/2029
मंगल	16/05/2025	गुरु	15/05/2026	शनि	20/02/2027	बुध	22/04/2028	केतु	02/08/2029
राहु	10/07/2025	शनि	02/07/2026	बुध	23/03/2027	केतु	24/05/2028	शुक्र	22/10/2029
गुरु	28/08/2025	बुध	14/08/2026	केतु	04/04/2027	शुक्र	23/08/2028	सूर्य	16/11/2029
शनि	24/10/2025	केतु	01/09/2026	शुक्र	10/05/2027	सूर्य	19/09/2028	चंद्र	26/12/2029
बुध	15/12/2025	शुक्र	22/10/2026	सूर्य	20/05/2027	चंद्र	04/11/2028	मंगल	24/01/2030
केतु	06/01/2026	सूर्य	06/11/2026	चंद्र	07/06/2027	मंगल	06/12/2028	राहु	07/04/2030

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
07/04/2030		06/11/2031		07/04/2033		06/11/2033		07/07/2035	
06/11/2031		07/04/2033		06/11/2033		07/07/2035		06/01/2036	
शनि	07/07/2030	बुध	18/01/2032	केतु	19/04/2033	शुक्र	15/02/2034	सूर्य	17/07/2035
बुध	27/09/2030	केतु	18/02/2032	शुक्र	25/05/2033	सूर्य	18/03/2034	चंद्र	01/08/2035
केतु	31/10/2030	शुक्र	14/05/2032	सूर्य	04/06/2033	चंद्र	07/05/2034	मंगल	11/08/2035
शुक्र	04/02/2031	सूर्य	09/06/2032	चंद्र	22/06/2033	मंगल	12/06/2034	राहु	08/09/2035
सूर्य	05/03/2031	चंद्र	22/07/2032	मंगल	04/07/2033	राहु	11/09/2034	गुरु	02/10/2035
चंद्र	23/04/2031	मंगल	21/08/2032	राहु	05/08/2033	गुरु	01/12/2034	शनि	31/10/2035
मंगल	26/05/2031	राहु	07/11/2032	गुरु	03/09/2033	शनि	08/03/2035	बुध	26/11/2035
राहु	21/08/2031	गुरु	15/01/2033	शनि	06/10/2033	बुध	02/06/2035	केतु	07/12/2035
गुरु	06/11/2031	शनि	07/04/2033	बुध	06/11/2033	केतु	07/07/2035	शुक्र	06/01/2036

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
06/01/2036		03/06/2036		22/06/2037		29/05/2038		07/07/2039	
03/06/2036		22/06/2037		29/05/2038		07/07/2039		04/07/2040	
मंगल	15/01/2036	राहु	31/07/2036	गुरु	06/08/2037	शनि	01/08/2038	बुध	28/08/2039
राहु	06/02/2036	गुरु	20/09/2036	शनि	29/09/2037	बुध	27/09/2038	केतु	18/09/2039
गुरु	26/02/2036	शनि	20/11/2036	बुध	16/11/2037	केतु	21/10/2038	शुक्र	17/11/2039
शनि	21/03/2036	बुध	13/01/2037	केतु	06/12/2037	शुक्र	27/12/2038	सूर्य	05/12/2039
बुध	11/04/2036	केतु	04/02/2037	शुक्र	01/02/2038	सूर्य	16/01/2039	चंद्र	05/01/2040
केतु	19/04/2036	शुक्र	09/04/2037	सूर्य	18/02/2038	चंद्र	19/02/2039	मंगल	26/01/2040
शुक्र	14/05/2036	सूर्य	28/04/2037	चंद्र	19/03/2038	मंगल	15/03/2039	राहु	20/03/2040
सूर्य	22/05/2036	चंद्र	30/05/2037	मंगल	07/04/2038	राहु	14/05/2039	गुरु	07/05/2040
चंद्र	03/06/2036	मंगल	22/06/2037	राहु	29/05/2038	गुरु	07/07/2039	शनि	04/07/2040

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	5
मित्र अंक	2, 7, 8, 5
शत्रु अंक	4, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	सन्तति सुख, सुख
लहसुनिया	केतु	83%	स्वास्थ्य, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	80%	भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	69%	दम्पति, भाग्योदय, कम खर्च
गोमेद	राहु	61%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	55%	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	38%	व्यावसायिक हानि, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
पुखराज	गुरु	25%	दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
माणिक्य	सूर्य	0%	दुर्घटना, हानि

रत्न की शुभता

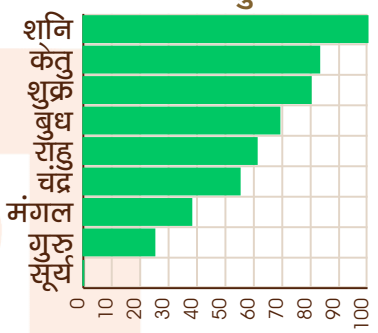

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	06/01/2026	22%	61%	50%	69%	38%	67%	96%	47%	70%
चंद्र	06/01/2036	9%	67%	38%	75%	25%	80%	100%	47%	70%
मंगल	06/01/2043	9%	61%	56%	56%	38%	80%	100%	47%	89%
राहु	05/01/2061	0%	34%	12%	69%	25%	86%	100%	73%	70%
गुरु	05/01/2077	9%	61%	50%	56%	50%	67%	100%	61%	83%
शनि	06/01/2096	0%	34%	12%	75%	25%	86%	100%	67%	70%
बुध	06/01/2113	9%	34%	38%	81%	25%	86%	100%	61%	83%
केतु	07/01/2120	0%	34%	50%	69%	25%	86%	96%	47%	95%
शुक्र	07/01/2140	0%	34%	38%	75%	25%	92%	100%	67%	89%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती प्रथम ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
साढेसाती तृतीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	अल्प बचत
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	कम खर्च
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव है। दशम भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में हमेशा उन्नतिशील रहेंगी। साथ ही अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर आप (या आपके पति) किसी उच्च प्रशासानिक पद, इंजीनियरिंग, मेडिकल अथवा होटल प्रबन्ध आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीया महिला समझी जाएंगी। आप अपने कार्यों से विशिष्ट सम्मान या उपलब्धि भी अर्जित कर सकती हैं। जिससे आपकी ख्याति भी दूर दूर तक फैलेगी। पिता के सुख एवं स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी। तथापि वे भी समाज में आदरणीय रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख प्रदान करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी आदि से कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगी। सुख पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगी। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपनी ओर से उन्हें पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। पंचम भाव पर मंगल दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा तथा संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब भी हो सकता है। यदा कदा बुद्धि में उग्रता का भाव भी उत्पन्न होगा लेकिन अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक पराक्रमी एवं प्रभावी महिला होंगी तथा जीवन में धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में पालन करने में आप समर्थ रहेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपको सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को पैतृक धन सम्पत्ति का अभिलषित फल प्रायः प्राप्त नहीं होता है। पैतृक सम्पत्ति को या तो दान दे देता है या आंशिक रूप में नुकसान हो जाता है। प्रेम प्रसंग में आंशिक असफलता होती है एवं गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना अधिक रहती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं और वे समय-समय पर पीड़ा पहुँचाते रहते हैं। जातक को साझेदारी के काम में नुकसान मिलता है।

इस योग के कारण जातक लालची प्रवृत्ति के, लाटरी, जुआ, सट्टा आदि के शैकीन हो जाते हैं। बनते कार्यों में थोड़ी बहुत रूकावटें आती है। कभी-कभी बड़ा पद मिलते-मिलते रह जाता है। किसी न किसी कारण से मानसिक परेशानी व चिन्ता पीछा नहीं छोड़ती। जातक को प्रायः पुत्र सन्तान का अभाव रहता है तथा कन्या से मानसिकता जुड़ती नहीं है। ऐसे व्यक्ति को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

इस योग के प्रभाव से इन्द्रिय जन्य गुप्त रोग जीवन में कभी-कभी परेशान करते रहते हैं। दूसरों को दिया हुआ पैसा प्रायः वापस नहीं आता है। फलस्वरूप जातक की आर्थिक स्थिति आंशिक रूप में नाजुक हो जाती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।

10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं

सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :– सूर्य
(29/05/2023 - 06/01/2026)

सूर्य की महादशा 29/05/2023 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की होकर 06/01/2026 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य अष्टम भाव में अवस्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, पिता, राजकीय कृपा, साहस तथा क्रोध का प्रतिनिधित्व करता है जबकि अष्टम भाव अप्रत्याशित लाभ, छुपी प्रतिभा, आध्यात्मिक लक्ष्य तथा लाभ का सूचक है। अतः इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, साझेदारों से लाभ तथा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हागी।

स्वास्थ्य :

आपकी जीवन शक्ति में वृद्धि होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपको आपके मार्ग में आनेवाली सभी समस्याओं का सामना करने की शक्ति तथा उत्साह प्राप्त होगा। आप में प्रतिरोध की क्षमता प्रबल है। कभी-कभी आप सरदर्द, लू, प्रदाह आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इन सभी समस्याओं से बचाव के लिये आपको सन्तुलित आहार लेना चाहिए। सभी अतिशयताओं का परित्याग करें।

अर्थ :

आप भाग्यशाली हैं ओर आपके साधन पर्याप्त हैं। फिजूल खर्ची से बचें अन्यथा आपका बैंक बैलेंस प्रभावित हो सकता है। आपको पैतृक अथवा अप्रत्याशित धन की प्राप्ति हो सकती है। सट्टेबाजी और निवेश का परित्याग करें। आपको सेवा-अवकाश से लाभ, बोनस तथा ग्रैच्यूइटी की प्राप्ति हो सकती है। कुल मिलाकर आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी।

व्यवसाय :

आपको सफलता, यश ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। सूर्य की अष्टम भाव में स्थिति के कारण कुछ अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं, किन्तु वे लाभदायक सिद्ध होंगे। आप किसी उच्च सरकारी पद पर आसीन होंगे क्योंकि आपमें प्रशासकीय क्षमता विद्यमान है। आप संस्थाओं, निगमों और अन्य संगठनों के प्रबन्धक पद के लिये अति उपयुक्त हैं। आप सैन्य अथवा राजनीतिक सेवा, प्रशासकीय कार्य, तकनीकी-वैज्ञानिक सेवाओं का चयन अपनी जीवन वृत्ति के लिये कर सकते हैं। पेशेवर खेल भी लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। सेवारत व्यक्तियों को सफलता, आमदनी, यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ की प्राप्ति होगी जबकि व्यापारियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

परिवार :

बच्चों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपको अपने विकल्पों के प्रति हठधर्मी नहीं होना चाहिए और अपने विचार दूसरों पर आरोपित नहीं करने चाहिएं। अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में कलह उत्पन्न हो सकता है। आपके जीवन साथी को आर्थिक लाभ मिलेगें और उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आप कैसा व्यवहार करें यह आप पर निर्भर करता है। आपकी माता को सट्टे तथा निवेश से लाभ होगा और बच्चों से सुख मिलेगा। आपके पिता

की आध्यात्मिक कार्यों में रुचि हो सकती है। आपके छोटे भाई-बहनों को उनके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी, और मातृ-पक्ष से लाभ मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को जीवन-वृत्ति में सफलता मिलेगी। आप स्वभाव से उदार तथा स्वामिभक्त हैं अतः आपके मित्रों की संख्या बड़ी होगी।

शिक्षा :

आप धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कर सकते हैं। अध्यात्म में आपकी रुचि हो सकती है।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(30/08/2024 - 05/01/2025)

आपके लिए सूर्य की महादशा 29/05/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 30/08/2024 को आरंभ होकर 05/01/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

आप में उच्चकोटि का अंतर्ज्ञान है। इसका प्रयोग परोपकार हेतु करना श्रेयस्कर रहेगा। दांपत्य जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। पारिवारिक शांति को भंग न होने दें। व्यर्थ की यात्राओं से बचें।

जीवनसाथी को प्रतिस्पर्धियों से कुछ समस्या हो सकती है। आपके पिता को आर्थिक मामलों में सतर्क रहना चाहिए। भाई-बहनों का समय उत्तम रहेगा। आपकी संतान के अपने पिता से संबंध तनापूर्ण हो सकते हैं। उनकी शिक्षा में प्रगति उत्तम रहेगी। अगर वे नौकरी में हैं तो घर से दूर जा सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन संभव है। परामर्शदाता तनावग्रस्त हो सकते हैं। व्यापारियों की यात्राएं होंगी और खर्चे बढ़ेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उदर रोग, मुख में संक्रमण से बचें; नेत्रों का ध्यान रखें।। अरिष्ट से बचने के लिए गणेशजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(05/01/2025 - 06/01/2026)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आपके पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आप धनवान, सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे। दान-धर्म में रुचि रहेगी। कला में दिलचस्पी होगी। प्रचार कार्य, धर्म में सफलता मिलेगी। सुख, प्रसन्नता, प्रसिद्धि, समृद्धि का योग है। आपके शुभचिंतक मित्र होंगे, आमोद-प्रमोद में समय बीतेगा, लघु यात्राएं होंगी और सुख-साधन उपलब्ध होंगे। मित्रों से पत्र व्यवहार लाभकारी रहेगा। छोटे भाई-बहनों से खुशी मिलेगी।

आपके जीवनसाथी को भाई-बहनों, यात्रा, संचार माध्यमों से लाभ होगा। पिता को धन का लाभ और व्यापार में सफलता का संकेत है। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी। भाई-बहनों को भागीदारी, अनुबंधों और बुजुर्गों से लाभ होगा। उनकी आय बढ़ेगी। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी, उन्हें निवेश से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे; कुछ परिवर्तन हो सकता है। व्यापारियों को अप्रत्याशित लाभ, परिवर्तन संभव हैं।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। पैरों में कोई मामूली तकलीफ हो सकती

महादशा :– चन्द्र
(06/01/2026 - 06/01/2036)

चंद्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 06/01/2026 को आरंभ और 06/01/2036 को समाप्त होगी।

चन्द्र द्वादश भाव में अवस्थित है और उसे प्रबल कर रहा है। द्वादश भाव नुकसान और विघ्न, क्षति, और अपव्यय, कड़ी मजदूरी और धोखा, उदार दान, परिवार से अलगाव, छिपे दुश्मन, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, घोटाला, अपमान तथा गुप्त दुःख का सूचक है। अतः दस वर्षों की यह अवधि मिश्रित प्रतिक्रियाओं से भरी होगी जिसमें आप उत्थान-पतन दोनों की आशा कर सकते हैं।

स्वास्थ्य :

आपका जीवन सामान्य रहेगा, किन्तु, कुछ विकृति की सम्भावना है। आपकी आँखें इस दशा में कमजोर हो सकती हैं, अतः इनकी देख भाल करें। आपका मस्तिष्क संकुचित हो सकता है जिससे आपका जीवन अन्धकारमय हो जाएगा और आप अलग-थलग पड़ जाएंगे।

अर्थ और सम्पत्ति : अर्थ की दृष्टि से यह अवधि आपके लिए सामान्य रहेगी और चन्द्र की इस दशा के दौरान आप अपनी सम्पत्तियों व बैंक बैलेंस में वृद्धि करने की स्थिति में नहीं होंगे। जहाँ-तहाँ निवेश करने के प्रति सावधानी बरतें, इससे इस दशा में नुकसान हो सकता है।

व्यवसाय :

आप अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट रहेंगे और व्यवसाय में परिवर्तन के लिए स्थान बदल सकते हैं। मार्गदर्शन प्राप्त करने तथा नये व्यवसाय आरम्भ के क्रम में आप कहीं दूर भी जा सकते हैं। अपने सभी सौदों में सावधानी बरतें क्योंकि आप जो भी नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे उसमें नुकसान हो सकता है।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन-साथी आपके सहायक होंगे और आप अपने पारिवारिक जीवन का भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपका पारिवारिक जीवन सुखमय और सौहार्द्रपूर्ण होगा। आपके बच्चे सहायक और आज्ञाकारी होंगे और परिवार में स्वस्थ वातावरण का निर्माण करेंगे। किन्तु इस दशा में बीमारी तथा अन्य विषयों पर अत्यधिक व्यय होगा। आप धार्मिक कार्यों पर भी व्यय करेंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(06/01/2026 - 06/11/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 06/01/2026 को प्रारंभ होकर 06/01/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 06/01/2026 को प्रारंभ होकर 06/11/2026 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। इस अवधि में आप रहस्य विद्या के अध्ययन में रुचि लेंगे। मष्तिष्क विचलित रह सकता है। चंद्र मन का कारक है, अतः आप अत्याधिक संवेदनशील होने से बचें।

किसी कांड में फंसने पर धन का अपव्यय हो सकता है, अतः सावधानी आवश्यक है।

द्वादश में चंद्र की स्थिति अशुभ मानी जाती है। अतः चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा को चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(06/11/2026 - 07/06/2027)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 06/01/2026 को प्रारंभ होकर 06/01/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 06/11/2026 को प्रारंभ होकर 07/06/2027 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित होकर 1, 4 और 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप खूब धन कमाएंगे और धनवान बन जाएंगे। आपका दबदबा अच्छा रहेगा और प्रबंधन में सख्त कदम उठाएंगे।

आप दक्ष कारीगर बन सकते हैं, अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप स्वयं उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। संतान की संख्या कम हो सकती है या संतानरहित हो सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रातःकाल हनुमान जी की पूजा कर 6 रत्ती का मूंगा सोने की अंगूठी में, कच्चे दूध से धोकर, दायें हाथ की कनिष्ठिका में हनुमान चालीसा 108 बार पढ़ कर धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(07/06/2027 - 06/12/2028)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 06/01/2026 को प्रारंभ हुई और 06/01/2036 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 07/06/2027 को प्रारंभ होकर 06/12/2028 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप स्वादिष्ट भोजन ग्रहण करेंगे। चरित्र पर नियंत्रण आवश्यक है क्योंकि आप विदेशियों या निम्न चरित्र के व्यक्तियों से संबंध स्थापित कर सकते हैं। स्वादिष्ट भोजन के कारण मधुमेह हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(06/12/2028 - 07/04/2030)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 06/01/2026 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 06/12/2028 को प्रारंभ होकर 07/04/2030 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव ओर जीवन को खतरे का परिचायक है। बृहस्पति शुभग्रह है। सप्तम में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 11, 1 और 3 भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है और इनके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है।

इस अवधि में आप नीतिज्ञ और दयालु होंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से लाभ होगा। दूसरों की भावनाओं की कद्र करेंगे। तीथयात्राएं संभव हैं। धर्म में रुचि रहेगी। शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 (रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के 99 जाप करने के बाद धारण करें।